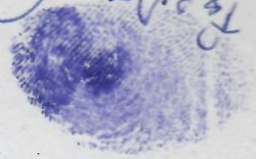


30/5/12

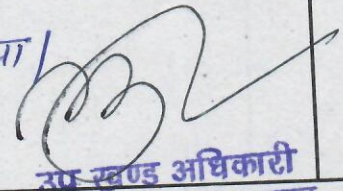
पञ्जावली आज राजा का लोक अहाल "पुण्य
आवने हार" आगे मान विधि ओकरा कला
में ये इई। धानी एवं अहलकाल रूप
उपस्थित जो राजीनामा हेतु समल नही
होने से पुराना को केन्य करे में लिया अहा
विचारता किया गया। पुराना से सबाधिन
मूल पत्र द्वारा 88, 188 का विचार धान
है। बायीं हात द्वारा 188 का पत्र 622
दिया था एवं अघायीं हात भूमि अपेक्षित
में होगा वला का हाथ 88 र.ग.प.प में
साले हाथ येथे दिया है जो जलाधुन जवाब
ना केन्य पर विचारधमि है। मूल पत्र है
मिलाना से पूर्व भूमि के मॉडे व रेकॉर्ड
की स्थिति में को परिवर्तन न हो इस
हेतु उक्त पत्र को पाठक किया अहा अयिल
प्रति लेता है असा मोगा ओकरा हवा लहलस
गो गुदा की अघायीं नखा 3327 र.दया 0.0200
है यामे के मॉडे एवं रेकॉर्ड की मर्यादा स्थिति
मूल पत्र है निर्यात लप वनागे 22वने
हेतु उक्त पत्र को जदि अथाक निर्याता
से पाठक किया जाता है पञ्जावली निर्यात
होता सत्वा से कम वी।
मिथि सुनाता गया।

हरिशंकर

पञ्जावली



पञ्जावली
(पत्नी मरुना)



उप खण्ड अधिकारी
गोगुन्दा जिला, उदयपुर